[Jain *, Vol.6 (Iss.12): December 2018] ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
(Received: December 04, 2018 - Accepted: December 30, 2018) DOI: 10.29121/granthaalayah.v6.i12.2018.1110

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

Arts

प्रयोगात्मक कला – एक विशलेषण

डॉ. सुषमा जैन [1]
[1] प्राचार्य, शुभांकन फाईन आर्ट कॉलेज, इन्दौर (म.प्र.)

मुख्य शब्द – प्रयोगात्मक कला, चित्रकला

Cite This Article: डॉ. सुषमा जैन. (2018). "प्रयोगात्मक कला – एक विशलेषण." *International Journal of Research - Granthaalayah*, 6(12), 213-215. 10.29121/granthaalayah.v6.i12.2018.1110.

अभिव्यंजना अथवा भावाभिव्यक्ति द्वारा सौंदर्य सृजन मनुष्य मात्र को चरम संतुष्टि प्रदान करता रहा है। फिर उसका माध्यम कुछ भी हो अभिव्यक्ति ही कलाकार का मुख्य उद्देश्य रहता है वह अपने उद्देश्य के अनुरूप माध्यम भी खोज लेता है। यह प्रक्रिया आदिमकाल से लेकर वर्तमान तक अनवरत रूप से जारी है। सर्वप्रथम मानव ने पत्थरों से शिलापट्टों पर आड़ी तिरछी रेखाएँ उकेरी तत्पश्चात उसने प्रकृति प्रदत्त रंगों तथा जानवरों की चर्बी को माध्यम बनाया उसमें भी विविधता दर्शाने के लिए उसने रंगों को पारदर्शी तथा अपारदर्शी रूप में उपयोग किया कहीं पूरक तथा कहीं अर्द्ध पूरक शैली का प्रयोग किया । कहीं रेखाएँ खीची तथा कहीं हाथ से छापे लगाए कहीं कहीं विविधता के लिए मुंह में भरकर रंग फूंका। प्राचीन काल तक आते आते कला उबड़खाबड़ शिलापट्टों से मुक्त हो चिकनी सतह पर आ गई। इस समय गुफाओं की भित्ति तैयार करने के लिए चूना, खड़िया, गोबर तथा बारीक बजरी का गारा जिसे अलसी के पानी में भिगोकर फूलने दिया जाता था। तत्पश्चात् भित्ति पर इसकी पौन इंच मोटी तह लगाई जाती थी फिर उसपर अण्डे के छिलके के बराबर मोटाई का सफेद पलस्तर का लेप चढ़ाया जाता था । इस प्रक्रिया से गुफाओ के चटटानी दीवारों के छिद्र भर जाते थे और दीवार चित्रण के लिए समतल हो जाती थी उस पर वानस्पतिक तथा खनिज रंगों को तैयार कर उपयोग में लाया जाता था इन चित्रों को सुरक्षित रखने के लिए अंडे की सफेदी, गोंद, सरेस, दूध आदि पदार्थ लासा के रूप में प्रयोग किए जाते थे। कालान्तर में भवनों, मन्दिरों तथा गिरजों की सपाट दीवारों पर चित्रण होने लगा । 14 वीं शती में कला दीवारों से उतर कर ताड़पत्र तथा पोथियों में समा गई संपूर्ण मध्यकाल में पोथी एवं पटचित्र की एक पुष्ट परंपरा प्रारंभ हुई । मिनिएचर चित्रों की रचनाएँ कागज पर की जाने लगी। कागज के बाद केनवस उसके साथ अनेक प्रकार की चित्रभूमि जैसे प्लाई बोर्ड, मेसोनाईट बोर्ड, लकड़ी के पाटे तथा जूट इत्यादि पर भी टेम्परा तथा जल रंगो से प्रयोग किए गए। चित्रों की मौलिकता का स्थान नवीनता ने ले लिया कुछ नया करने की चाह में फलक के साथ साथ माध्यम भी परिवर्तित हो गए। रंगों का स्थान वस्तुओं ने ले लिया तथा तैयार वस्तुएँ कलात्मक मानकर स्थापित की गई। नवीनता की खोज की दौड़ में कलाकारों ने माध्यम को पीछे छोड़ दिया तथा वह स्वयं ही कलाकृति बन खडा होने को उद्यत हो गया।

प्रेक्षक दीर्घकाल तक चित्राकृतियों का स्मरण रखता है अतः कलाकार की सृजनात्मक कुशलता एवं कला कौशल ही विभिन्न माध्यमों पर उसकी दक्षता को चित्र में परिलक्षित करता है तभी सच्ची कलाकृति का सृजन होता है तथा प्रेक्षक चित्र के सौंदर्य संप्रेषण को ग्रहण करता है। प्रेक्षक एवं कलाकार दोनों के लिए कला सुखद आध्यात्मिक अनुभूति होती है।

आधुनिक कला में 20 वीं सदी का प्रांरभ एक रचनात्मक क्रान्ति ले कर आया। इस समय कला बहुआयामी हो गयी और कलाकार अभिव्यक्ति के लिए नित नए प्रयोग करने लगा। इन प्रयोगों के फलस्वरूप मिक्स मीडिया एक समर्थ माध्यम के रूप में उभर कर आया जिसे कलाकारों ने खुले दिल से अपनाया। इसमें कलाकार दो अथवा उससे भी अधिक माध्यमों का एक ही कलाकृति में प्रयोग करता है तो वह मिक्स मीडिया (मिश्रित माध्यम) की श्रेणी में आयेगी चाहे वह तैल रंग हो अथवा एक्रिलिक चाहे उनके साथ अनेकों प्रकार के टेक्श्चर अथवा अन्य रंगो का उपयोग किया गया हो। भारत में कई कलाकारों ने इस प्रकार के प्रयोग किए तथा टेक्स्चर के रूप में कई संसाधनों का उपयोग किया चित्र धरातल पर रंग लगाने से पहले जूट, बालू, लाख, जिंक आक्साईड, फेवीकोल एवं लकडी का बुरादा इत्यादि वस्तुओं के प्रयोग से चित्रतल बनाकर रंगाकन किया गया जैसे जलरंग एवं टेम्परा, जलरंग एवं एक्रिलिक रंग, तैलरंग के साथ एक्रिलिक, जलरंग के साथ चारकोल, इनेमल के साथ जलरंग, तैलरंग इत्यादि रंगो में तेल की मात्रा बढ़ाकर रंगो को बहाकर गाढ़े अथवा मोटे थक्कों के रूप में भी प्रयोग किया गया।

भारतीय कलाकार शान्ति दवे तथा गायतोण्डे के चित्रो में मिश्रित माध्यमों का कुशलता से प्रयोग किया गया है। शान्ति दवे मोम, रेत, रंग इत्यादि से चित्रण में त्रिआयामी प्रभाव उत्पन्न करते है जिससे चित्र अधिक रचनात्मक तथा प्रभावोत्पादक प्रतीत होते है।

कलाकार अपने प्रयोग से उन्हें जो भी माध्यम सटीक लगता है वे उसे अपनाते जाते है। म्यूरल रचना में माचिस की डिब्बी, रंग के खाली डिब्बों के ढक्कन, मिट्टी अखबार, कागज की लुगदी, सिरेमिक, टाइल्स के टूटे हुए टुकड़े इत्यादि से रिलीफ चित्रतल बनाकर उस पर रंगाकन किया जाता है । निश्चय ही ये म्यूरल अधिक रचनात्मक नजर आते है तथा एक अनोखा प्रभाव उत्पन्न करने के लिए कपड़ा, लकड़ी, क्ले इत्यादि का रंगो के साथ प्रयोग किया जाता है। सतीश गुजराल तथा अंजलि इला मेनन की कृतियों में इस प्रकार के प्रयोग देखे जा सकते है।

म्यूरल के लिए लकड़ी के साथ साथ मैटल शीट का भी कलाकारों ने उपयोग किया। धातु सतह को ढोक पीट कर टेक्श्चर डालकर चित्र उत्कीर्ण किए गए जो ठोस रिलीफ का प्रभाव उत्पन्न करते हैं । इसके अतिरिक्त लकड़ी धातु रबर शीट आदि को माध्यम बना कर कलाकारों ने प्रिंट कलाकृतियों की रचना की । वर्तमान में चित्राकृतियों में विभिन्नता दर्शाने के लिए फोटोग्राफी को भी जोड़ा गया। जिसमें चित्र संयोजन ने एक नया स्वरूप धारण किया।

कला जगत में नवीन परिवर्तन के रूप में कम्प्युटर का प्रयोग हुआ । पाश्चात्य देशों में लगभग 1960 से ही कलाकारों ने इसे अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया क्योंकि इसमें उन्हें अपार संभावनाएँ प्रतीत हुई । भारत वर्ष में 1993 में अहमदाबाद में एक प्रदर्शनी आयोजित की गई जिसमें मनुपारेख, मनजीत बाबा, रजा, हुसैन इत्यादि स्थापित कलाकारों ने चित्रकला के साथ मिक्स मीडिया के रूप में कम्प्युटर का प्रयोग किया इस प्रदर्शनी की सफलता ने भारतीय कलाकारों की सोच को नयी दिशा प्रदान की तथा कम्प्युटर निर्मित कलाकृतियों को मान्यता प्राप्त हुई। यह एक ऐसा माध्यम है जिसमें क्लिक करते ही हजारों रंगो के शेड्स की कलर पेलेट उपलब्ध है ऐसे इलेक्ट्रानिक पेड तथा सॉफ्टवेयर बना दिए गए है जो कलाकार द्वारा की गई ड्रॉईंग की इमेज को ज्यों का त्यों कम्प्युटर स्क्रीन पर ले आते है फिर इसमें कलाकार अपनी इच्छा के अनुसार टेक्स्चर तथा छाया प्रकाश आदि का प्रभाव उत्पन्न कर चित्र बना सकता है, जिसे डिजिटल पेटिंग का नाम दिया गया है। कम्प्युटर एक उन्नत तथा सक्षम माध्यम है कलाकार एक चित्र को महीनों तथा दिनों में पूरा करने की समस्या से मुक्त हो रहा है। छोटे से चित्र का बड़ा प्रिंट केनवस पर लेना आसान गया है कलाकार अपने ही बनाए चित्र की विभिन्न आकार में अनेक प्रिंट ले सकता है। विज्ञापन जगत में इस माध्यम का भविष्य उज्जवल प्रतीत होता है किन्तु कला जगत में हस्त निर्मित कलाकृतियों का स्थान सुरक्षित है जिसे नकारा नही जा सकता।

रचनात्मक नयापन तथा कलाकार की हरदम कुछ नया करने की चाह वर्तमान में पश्चिम का प्रभाव ग्रहण कर आगे बढ़ी है। योरोप में विभिन्न तकनीकों से चित्रों की रचनाएँ की गई जिनमें भितिचित्र, टेपेस्ट्री चित्र, मणिकुट्टिम चित्र, रंगीन काँच की खिड़कियों पर चित्रकारी जलरंग एवं कोलाज इत्यादि है । आधुनिक कला के कोलाज माध्यम ने विश्वभर में क्रान्ति ला दी पश्चिम कला में दादावादियों ने ही सर्वप्रथम अभिनव प्रयोग कर अपनी प्रदर्शनियों में पुराने चित्र, बंद खराब घडियाँ, लकड़ी के टुकड़े तथा अन्य टूटे फूटे सामान को माध्यम बना चित्ररूप में अनोखे शीर्षक देकर प्रदर्शित किया। इस माध्यम से अभिव्यक्ति का प्रभाव समय के साथ बढ़कर संस्थापन कला (इंस्टालेशन आर्ट) के रूप में स्थापित हो गया है। एम. एफ. हुसैन ने आधुनिक कला दीर्घा में श्वेताम्बरी नामक इंस्टालेशन आयोजित किया था, जिसमें एक सफेद कपड़े को पूरे फर्श पर फैला कर नयी रचना की थी। एक अन्य इंस्टालेशन में लकड़ी के पट्टों को माध्यम बना कर एक घोड़े का निर्माण किया जिसकी कमर में एक टायर डालकर उसे क्रिएटिव स्वरूप दिया।

विदेशों में साधारण प्रदर्शनियों में भी इंस्टालेशन देखने को मिल जाएगा किन्तु भारतीय कलाजगत में इस प्रकार के प्रयोग महानगरों में ही अधिक प्रचलित है। किन्तु यह एक विचारणीय प्रश्न है कि व्यापक रूप से मान्यता मिल जाने पर इस माध्यम का भविष्य क्या होगा क्योंकि इस में कुछ भी किसी भी रूप में प्रदर्शित किया जा सकता है

कलाकारों के नित नए प्रयोग एवं अन्वेषण से ही कला अपनी विकास यात्रा को प्राप्त करती है यह सतत् चलने वाली प्रक्रिया है। निश्चय ही भविष्य में आज प्रचलित माध्यम भी पुराने हो जायेंगे तथा कलाकार अपनी अभिव्यक्ति के और कई नवीन माध्यम खोज अपनी कला को नवीन अर्थ प्रदान करने में सक्षम होगा।

संदर्भ

1. डॉ. अविनाश बहादुर वर्मा – भारतीय चित्रकला का इतिहास
2. डॉ. रीता प्रताप – भारतीय चित्र एवं मूर्तिकला का इतिहास
3. डॉ. राजेन्द्र वाजपेयी – सौंदर्य
4. आधुनिक चित्रकला का इतिहास – र. वि. साखलकर
5. दृष्टि और सृष्टि – नंदलाल बोस
6. कला दीर्घा – पत्रिका अक्टूबर अप्रेल 2003, 2004, 2005
7. समकालीन कला – पत्रिका जून सितम्बर 2002, नबम्बर 2005, फरवरी 2006
8. आर्ट इंडिया पत्रिका – अप्रेल मई 2011–12